कुम्भलगढ़ दुर्ग (भू-विन्यास)

1. खांध 2. पुराना किला 3. पितलिया देव 4. बादल महल
5. कुम्भा महल 6. गोलेराव मन्दिर समूह 7. नीलकण्ठ महादेव मन्दिर
8. जैन मन्दिर 9. बावन देवरी 10. विजय पोल 11. हनुमान पोल
12. राम पोल 13. बावड़ी

भ्रमण समय

सूर्योदय से सूर्यास्त तक

प्रवेश शुल्क

भारतीय	विदेशी
रू.5/-	*यू.एस. 2 डालर या रू. 100/-*

(15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश)

मुद्रक : टैक्नोक्रेट ऑफसैटर्स, जयपुर, फोन : 2504404

कुम्भलगढ़

सत्यमेव जयते

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर

कुम्भलगढ़

अरावली पर्वत श्रृंखला की ऊँची चोटी पर अवस्थित कुम्भलगढ़ दुर्ग अपने सामरिक महत्व के कारण राजस्थान के महत्वपूर्ण दुर्गों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस दुर्ग के निर्माण का श्रेय महाराणा कुम्भा को जाता है जिन्होंने शिल्पज्ञ मंडन (1443-1458 ई.) को इसके निर्माण का दायित्व सौंपा था। जनश्रुति के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण जैन मतावलम्बी संप्रति (दूसरी शताब्दी ई.पू.) द्वारा पूर्व निर्मित अवशेषों के ऊपर किया गया था। राणा कुम्भा के शासन काल में मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों ने इस दुर्ग को विजित करने का प्रयास किया पर दुर्ग की शक्तिशाली चाहरदीवारी और अजेय स्थिति के कारण उन्हें विफलता हाथ लगी। अपने समय के महान निर्माणकर्ता राणा फतेह सिंह (1885-1930 ई.) ने इस दुर्ग में बादल महल का निर्माण करवाया। किले की परिधि में अवस्थित महत्वपूर्ण निर्माण के अन्तर्गत कुछ हिन्दू व जैन मन्दिर, जलाशय, बावड़ी, छतरी व कुछ अन्य लघु मंदिर व महल आदि प्रमुख हैं।

प्रवेश द्वार : दुर्ग में प्रवेश करने के लिए आरेट पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, राम पोल एवं विजय पोल क्रमशः एक के बाद एक द्वार के रूप में अवस्थित हैं। दुर्ग का प्रमुख प्रवेश द्वार 'हनुमान पोल' है जहां महाराणा कुम्भा द्वारा माण्डवपुर से लाई गई हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की गई थी। दुर्ग के अन्दर भैरव पोल, नींबू पोल एवं पागड़ा पोल के द्वारा किले के ऊपरी भाग में स्थित राजप्रसाद तक जाया जा सकता है। इस दुर्ग में पूर्व की ओर दानी-बट्टा नामक प्रवेश द्वार है जो मेवाड़ क्षेत्र को मारवाड़ से जोड़ता है।

गणेश मन्दिर : महाराणा कुम्भा के शासन काल में निर्मित यह मंदिर दुर्ग की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर अवस्थित है। चित्तौड़गढ़ कीर्ति स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार राणा कुम्भा ने इस मंदिर में एक गणेश प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।

वेदी मन्दिर : इस मंदिर का निर्माण भी राणा कुम्भा ने यज्ञ कार्य हेतु 1457 ई. में करवाया था। ऊँची जगती पर अवस्थित यह दो मंजिला पश्चिमाभिमुख निर्माण है जो अष्टकोणीय योजना पर निर्मित है जिसकी गुम्बदनुमा छत छत्तीस स्तम्भों पर टिकी है। इस मंदिर परिसर में देवी को समर्पित तीन अन्य मंदिर स्थित हैं।

नीलकंठ महादेव मंदिर : वेदी मंदिर के पूर्व की ओर अवस्थित एवं ऊँची जगती पर निर्मित इस शिव मंदिर का निर्माण 1458 ई. में हुआ था। इसमें प्रवेश के लिए पश्चिम की ओर सोपान बने हैं। गर्भगृह के चारों ओर चौबीस स्तम्भों वाला खुला मण्डप है। पश्चिमी द्वार के बायीं ओर अवस्थित एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से पता चलता है कि राणा सांगा ने इस मंदिर का पुनरुद्धार करवाया था।

पार्श्वनाथ मंदिर : चार फीट ऊँचे प्रस्तर खंड पर निर्मित इस मंदिर का निर्माण विक्रम संवत् 1508 में नरसिंह पोखड़ ने करवाया था। गर्भगृह में तीन फुट ऊँची पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थित है जिसके दोनों पार्श्वों में लाल पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ हैं।

बावन देवरी मंदिर : इस प्रसिद्ध जैन मंदिर का नाम एक ही परिसर में निर्मित बावन (52) मंदिरों के आधार पर पड़ा जिनका एक मात्र प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। अपेक्षाकृत बड़े मंदिर में एक गर्भगृह, अन्तराल व खुला मण्डप है। गर्भगृह के ललाट बिम्ब पर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित है किन्तु छोटे मंदिर मूर्तिविहीन हैं।

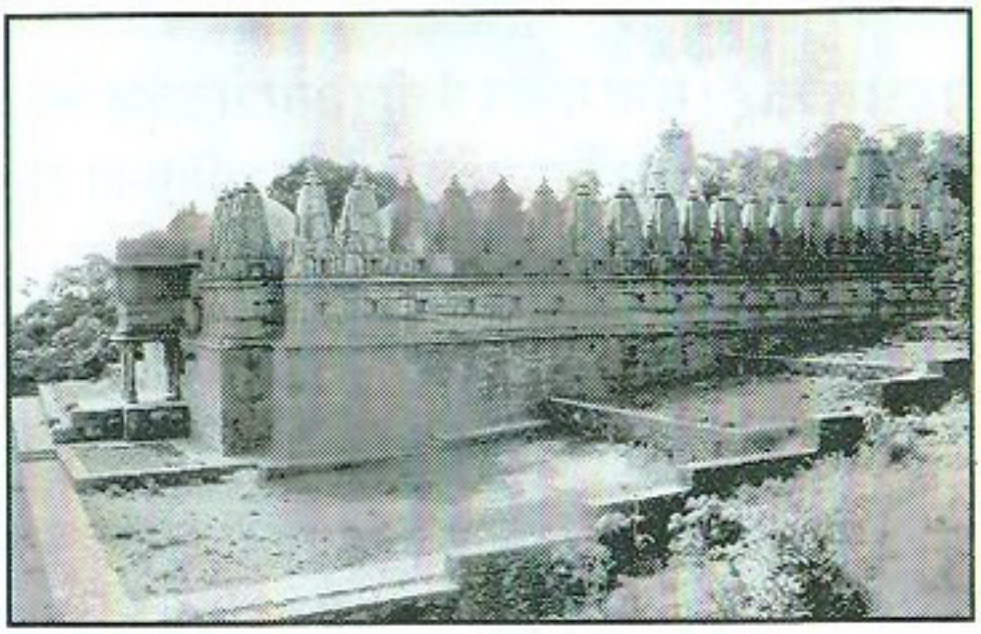

गोलेराव मंदिर समूह : यह बावन देवरी मंदिर से पश्चिम की ओर एक ऊँची पहाड़ी पर निर्मित मंदिरों का समूह है। मंदिर की बाह्य भित्ति पर ब्रह्मा, शिव और विष्णु का उत्कीर्णन अत्यन्त कलात्मक है। मंदिर की स्थापत्यजन्य विशेषताएं इसे राणा कुम्भा कालीन निर्माण होने को इंगित करती हैं।

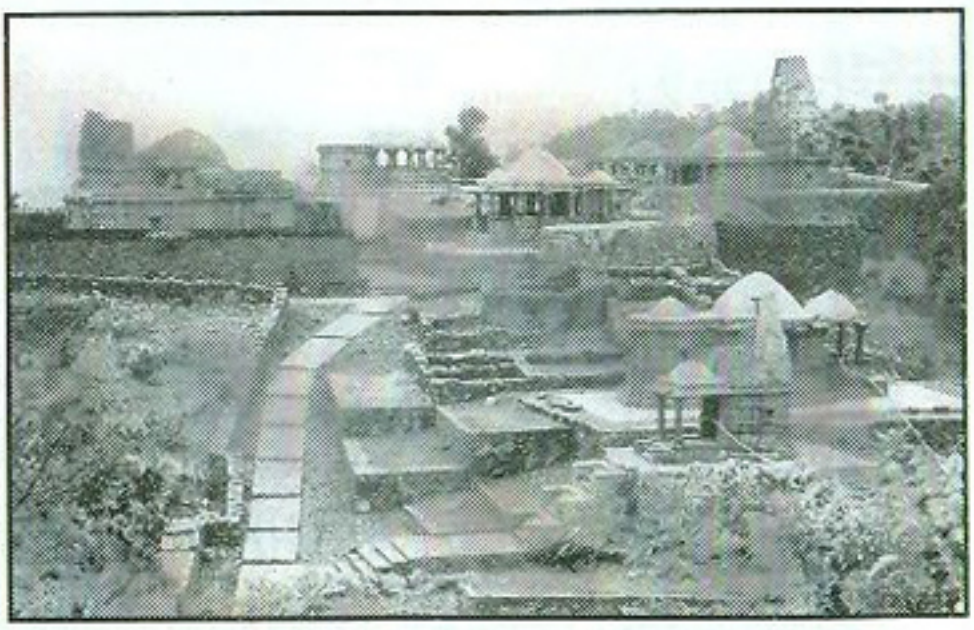

पितलिया देव मंदिर : यह पश्चिमाभिमुख मंदिर किले के उत्तरी भाग में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण पितलिया जैन सेठ ने

विक्रम संवत 1512 में करवाया था। भू-विन्यास की दृष्टि से यह एक बहु स्तम्भीय सभा मण्डप व गर्भ गृह से युक्त है। सभा मण्डप में तीन ओर से प्रवेश किया जा सकता है। बाह्य जंघा अप्सराओं एवं नर्तकियों के अतिरिक्त देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित हैं।

मामादेव मंदिर : इसे कुम्भा श्याम के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर की छत सपाट है एवं सामने की ओर स्तम्भ युक्त मण्डप है। राणा कुम्भा ने कुम्भलगढ़ के इतिहास को इस मंदिर के पत्थरों पर उत्कीर्ण करवाया था। देवी-देवताओं की अनेक आकर्षक मूर्तियां इस मंदिर से प्राप्त हुई हैं। मंदिर के पास स्थित मामादेव तालाब के किनारे उदासिंह ने 1512 ई. में अपने पिता राणा कुम्भा की छलपूर्वक हत्या कर दी थी।

कुम्भा महल : पगड़ा पोल के पास स्थित यह महल एक दुमंजिला भवन है। महल में नीचे दो कक्ष, एक बरामदा व सामने की ओर खुला प्रांगण हैं। कक्ष में नक्काशीदार पत्थरों से निर्मित झरोखें एवं खिड़कियां हैं।

महाराणा प्रताप का जन्म स्थान : पगड़ा पोल के पास स्थित भवन झालिया-का-मालिया एवं रानी झाली का महल के नाम से प्रसिद्ध यह भवन अनगढ़ पत्थरों से निर्मित अलंकृत दीवारों वाला हैं जिसे महाराणा प्रताप के जन्म-स्थान के रूप में जाना जाता है। इसकी दीवारें चित्रित थी जिसके अंश अभी भी देखे जा सकते हैं।

बादल महल : अनेक बड़े व छोटे कक्षों से युक्त जनाना व मर्दाना महल के नाम से प्रसिद्ध दो भागों में विभक्त इस दो मंजिले भवन का निर्माण राणा फतेह सिंह (1884-1930 ई.) ने करवाया था। जनाना महल के बरामदे व खिड़कियां जाली कार्य से युक्त हैं ताकि महल की रानियाँ बिना दिखे वहां होने वाले कार्यक्रमों को देख सके।